प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 17 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

सृष्टि ने मानव को जो सर्वश्रेष्ठ वरदान दिए हैं उनमें से एक महत्वपूर्ण वरदान हैं–स्वस्थ शरीर। स्वस्थ शरीर से ही जिंदगी की सही शुरुआत होती है। अस्वस्थ शरीर में कहाँ जीवन होता है? वह तो जीवन पर बोझ होता है। जीवन के सभी सुख, सभी सौंदर्य, सभी आनंद स्वस्थ होने पर ही मिलते हैं। स्वास्थ्य सभी जीवधारियों के आनंदमय जीवन की कुंजी है; क्योंकि स्वास्थ्य के बिना जीवधारियों की समस्त क्रियाएँ–प्रक्रियाएँ रुक जाती हैं या शिथिल हो जाती है। जीवन को जल भी इसीलिए कहा जाता है। जिस प्रकार रुका जल सड़ जाता है, दुर्गंधयुक्त हो जाता है, ठीक इसी प्रकार शिथिल और कर्महीन जीवन से स्वास्थ्य खो जाता है। स्वास्थ्य और खेल–कूद का परस्पर गहरा संबंध है। पशु–पक्षी हो या मनुष्य, जो खेलता–कूदता नहीं, वह उत्फुल्ल और प्रसन्न रह नहीं सकता। जब हम खेलते हैं तो हममें नया प्राणावेग, नई स्फूर्ति और नई चेतना आ जाती है। हम देखते हैं कि हवा के झोंके एक–दूसरे का पीछा करते हुए दूर–दूर तक दौड़ते हैं, वृक्षों की शाखाओं को हिला–हिलाकर अठखेलियाँ करते हैं। आकाश में उड़ते पक्षी तरह–तरह की क्रीड़ाएँ करते हैं। हमें भी जीवन–जगत से प्रेरणा लेते हुए खुले मन से खेल–कूद में भाग लेना चाहिए।

1. स्वस्थ शरीर का क्या महत्व है? 2

उत्तर : स्वस्थ शरीर से ही जिंदगी की सही शुरुआत होती है। जीवन के सभी सुख, सौंदर्य, आनंद व्यक्ति के स्वस्थ होने पर ही प्राप्त होते हैं। स्वास्थ्य सभी जीवधारियों के आनंदमय जीवन की कुंजी है।

2. स्वास्थ्य और खेल–कूद परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं। कैसे? 2

उत्तर : स्वास्थ्य और खेल–कूद का परस्पर गहरा संबंध है। खेल–कूद से प्राणों में नई स्फूर्ति और नई चेतना तथा मन में प्रसन्नता पैदा होती है। परिणामस्वरूप स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

3. उदाहरण देते हुए सिद्ध कीजिए कि प्रकृति भी खेल–कूद पसंद करती है। 2

उत्तर : हवा के झोंके एक–दूसरे का पीछा करते हुए जान पड़ते है। आकाश में उड़ते हुए पक्षी भी तरह–तरह की क्रीड़ाएँ करते हैं। इससे ज्ञात होता है कि प्रकृति भी खेल–कूद पसंद करती है।

4 स्वास्थ्य का कर्म से क्या संबंध है? 2

उत्तर : कर्म करने वाला व्यक्ति गतिशील और तरोताजा रहता है। उसकी शिथिलता समाप्त हो जाती है। परिणामस्वरूप स्वास्थ्य भी उत्तम रहता है।

5. जीवन को जल क्यों कहा गया है? 1

उत्तर : जीवन को जल इसलिए कहा गया है क्योंकि जीवन की प्रकृति जल के समान है। जल के समान ठहरा हुआ जीवन भी शिथिल और कर्महीन स्वास्थ्य खो देता है।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : स्वास्थ्य और खेलकूद।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. युवा धनुर्धर को सेनापति ने युद्ध में भेजा। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जो धनुर्धर युवा था उसे सेनापति ने युद्ध में भेजा।

2. मैं विद्यालय पहुँचा परंतु घंटी बज चुकी थी। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : मेरे विद्यालय पहुँचने से पहले घंटी बज चुकी थी।

3. जो मन लगाकर काम करते हैं, उन्हें सफलता मिलती है। (आश्रित उपवाक्य छाँटकर भेद भी लिखिए)

उत्तर : जो मन लगाकर काम करते हैं–विशेषण आश्रित उपवाक्य।

4. मेरी माँ चाहती हैं कि मैं अच्छा इंसान बनूँ। (रेखांकित उपवाक्य का भेद भी लिखिए।)

उत्तर : मेरी माँ चाहती हैं–प्रधान उपवाक्य।

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. मोहन से पैदल चला नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : मोहन पैदल चल नहीं सकता।

2. आओ, वहाँ बैठे। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : आओ, वहाँ बैठा जाए।

3. किसान खेतों में बीज बोता है। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : किसान द्वारा खेतों में बीज बोया जाता है।

4. छात्रों द्वारा पाठ याद किया जाता है। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : छात्र पाठ याद करते हैं।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. सूर्योदय हुआ और पक्षी चहचहाने लगे।

उत्तर : समुच्चयबोधक अव्यय।

2. वीर पुरुषों का सर्वत्र आदर किया जाता है।

उत्तर : गुणवाचक विशेषण, बहुवचन, पुल्लिंग, विशेष्य–'पुरुषों'।

3. अध्यापिका ने बच्चों को एक कहानी सुनाई।

उत्तर : सकर्मक क्रिया (द्विकर्मक), एकवचन, स्त्रीलिंग, भूतकाल, कर्तृवाच्य।

4. अवनि कल आएगी।

उत्तर : कालवाचक क्रियाविशेषण, 'आएगी' क्रिया की विशेषता।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. 'वीर' रस का एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर : तनकर भाला यूँ बोल उठा
राणा! मुझको विश्राम न दें।
मुझको वैरी से हृदय-क्षोभ
तू तनिक मुझे आराम न दे।

2. रति किस रस का स्थायी भाव है?

उत्तर : शृंगार रस।

3. क्रोध किस रस का स्थायी भाव है?

उत्तर : रौद्र रस।

4. 'करुण-रस' का स्थायी भाव क्या है?

उत्तर : शोक।

5. वात्सल्य रस का स्थायी भाव लिखिए।

उत्तर : वत्सल।

खण्ड–ग 34

(पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक पाठ्य-पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

किसी दिन एक शिष्या ने डरते-डरते खाँ साहब को टोका, ''बाबा! आप यह क्या करते हैं, इतनी प्रतिष्ठा है आपकी। अब तो आपको भारतरत्न भी मिल चुका है, यह फटी तहमद न पहना करें। अच्छा नहीं लगता, जब भी कोई आता है आप इसी फटी तहमद में सबसे मिलते हैं।'' खाँ साहब मुसकराए, लाड़ से भरकर बोले, ''धत्! पगली ई भारतरत्न हमको शहनईया पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं। तुम लोगों की तरह बनाव सिंगार देखते रहते, तो उमर ही बीत जाती, हो चुकती शहनाई। तब तक खाक रियाज हो पाता। ठीक है बिटिया, आगे से नहीं पहनेंगे, मगर इतना बताए देते हैं कि मालिक से यही दुआ है, फटा सुर न बख्शे। लुंगिया का क्या है, आज फटी है तो कल सी जाएगी।''

1. 'तुम लोगों की तरह बनाव सिंगार देखते रहते तो उमर ही बीत जाती, हो चुकती शहनाई।' उपर्युक्त कथन में युवावर्ग के लिए क्या संदेश है? 2

उत्तर : प्रश्नोक्त कथन में युवावर्ग को बनाव-शृंगार पर ध्यान न देकर अपने लक्ष्य के प्रति एक निष्ठता और एकाग्रता का संदेश दिया गया है।

2. किसी भी कला या कार्य की सफलता में रियाज का कितना योगदान होता है, गद्यांश के आधार पर लिखिए। 2

उत्तर : अभ्यास के बिना कला या कार्य के स्तर और गुणवत्ता में कमी आने लगती है इसी कारण बिस्मिल्ला खाँ आजीवन अभ्यास करते रहे।

3. शिष्या के टोकने को बिस्मिल्ला खाँ ने बुरा क्यों नहीं माना? 2

उत्तर : शिष्या के टोकने में व्यंग्य या अपमान का नहीं अपितु अपनत्व का भाव था। इसलिए बिस्मिल्ला खाँ ने उसकी बात का बुरा नहीं माना। साथ ही बिस्मिल्ला खाँ बनाव-शृंगार से ज्यादा अपने कार्य में निपुणता पर ध्यान देते थे।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए- $2 \times 4 = 8$

1. हालदार साहब के लिए कौन-सा कौतूहल दुर्दमनीय हो उठा, जिसे पान वाले से पूछे बिना नहीं रह सके?

उत्तर : हालदार साहब जब तीसरी बार गुजरे तो चौराहे पर रुककर उन्होंने पान खाया और मूर्ति को ध्यान से देखा तो इस बार भी चश्मा बदला हुआ था। मूर्ति का चश्मा बदले जाने के कारण को जानने का कौतूहल अब दुर्दमनीय हो गया। फलस्वरूप उन्होंने पान वाले से पूछ ही लिया कि यह तुम्हारे नेता जी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है?

2. बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?

उत्तर : बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण इसलिए थी, क्योंकि वे जीवन के सिद्धांतों और आदर्शों का अत्यंत गहराई से पालन करते हुए उन्हें अपने आचरण में उतारते थे। उदाहरण के लिए किसी की चीज को नहीं लेना उनका सिद्धांत था। इस नियम को वे इतनी बारीकी तक ले जाते कि दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते थे। यह देखकर लोगों को आश्चर्य होता था।

3. लेखिका मन्नू भंडारी अपने ही घर में हीन भावना का शिकार क्यों हो गई?

उत्तर : लेखिका बचपन से काली, दुबली–पतली और मरियल –सी थी। इसके विपरीत उनकी दो साल बड़ी बहन सुशीला खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख थी। लेखिका के पिता को गोरा रंग पसंद था। वे बात–बात में लेखिका की तुलना उसकी बहन से करते और उसे हीन सिद्ध करते। इससे लेखिका के मन में धीरे–धीरे हीनता की ग्रंथि पनपने लगी और वह हीन भावना का शिकार हो गई।

4. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ काशी छोड़कर अन्यत्र क्यों नहीं जाना चाहते थे?

उत्तर : उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ काशी से असीम लगाव रखते थे। बाबा विश्वनाथ और बाला जी में उनकी आस्था थी। उनके पूर्वजों ने काशी में रहकर शहनाई बजाई। बिस्मिल्ला खाँ ने काशी में ही रहकर शहनाई बजाना सीखा और संस्कार अर्जित किए। उनके नाना और मामा का जुड़ाव भी काशी से रहा था, इसलिए वे काशी छोड़कर अन्यत्र नहीं जाना चाहते थे।

5. नवाब साहब खीरा खाने के अपने ढंग के माध्यम से क्या दिखाना चाहते थे?

उत्तर : नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक–मिर्च बुरका, अंततः सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया, संभवतः लेखक को नीचा दिखाने और अपनी खानदानी रईसी का परिचय देने के लिए किया होगा। उसका ऐसा करना उसके अभिमान से युक्त स्वभाव को इंगित करता है।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यों जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीती–नदी मैं पाऊँ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चांटी ज्यौं पागी।।

1. 'अति बड़भागी' में निहित व्यंग्य भाव को स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : गोपियों के द्वारा प्रयुक्त 'अति बड़भागी' अपने भीतर व्यंग्य भाव समेटे हुए है। वे हँसी–मजाक में ऊधौ को भाग्यशाली मानती हैं क्योंकि ऊधौ श्रीकृष्ण के समीप रहकर भी उनके प्रेम के बंधन में नहीं बँध सके और न ही कभी उनके प्रेम में व्याकुल हुए।

2. गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना किस–किस से की है और क्यों? 2

उत्तर : उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते और तेल की मटकी से करते हुए गोपियाँ कहती हैं कि जिस प्रकार कमल का पत्ता जल में ही रहता है, फिर भी उस पर पानी का धब्बा तक नहीं लग पाता, उसी प्रकार तेल की मटकी को पानी में रखने पर उस पर जल की एक बूँद तक नहीं ठहर पाती, ठीक वैसे ही उद्धव कृष्ण के समीप रहते हुए भी उनके रूप के आकर्षण तथा प्रेम–बंधन से सर्वथा मुक्त हैं।

3. गोपियों ने अपनी तुलना गुड़ से लिपटी चीटियों से क्यों की है? 2

उत्तर : गोपियों ने अपनी तुलना गुड़ से लिपटी चीटियों से इसलिए की है क्योंकि गुड़ से चीटियों का विशेष लगाव होता है। यदि इन चींटियों को अलग करने का प्रयास करें तो वे प्राण दे देती है पर अलग नहीं होती हैं। यही स्थिति अब गोपियों की है। वे किसी भी दशा में कृष्ण के प्रेम को त्यागना नहीं चाहती हैं।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. 'संगतकार' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि संगतकार जैसे व्यक्ति सर्वगुण संपन्न होकर भी समाज में आगे न आकर प्रायः पीछे ही क्यों रहते हैं?

उत्तर : 'संगतकार' प्रवृति के लोग छल–प्रपंच से दूर, श्रद्धा के धनी होते हैं। वे मुख्य कलाकार के सहयोगी होते हैं। अपने प्रति विश्वास को खत्म नहीं करना चाहते हैं। मुख्य कलाकार को धोखा देना अपनी प्रवृत्ति के अनुसार पाप समझते हैं। अपने मुख्य कलाकार के साथ छल–प्रपंच करके आगे निकलना नितांत अनुचित समझते हैं। वे अपनी परोपकार और त्याग की भावना के पीछे ही बने रहते हैं।

2. धनुष भंग करने वाली सभा में एकत्रित जन 'हाय–हाय' क्यों पुकारने लगे थे? 'राम–लक्ष्मण परशुराम संवाद' पाठ के आधार पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर : सभा में परशुराम और लक्ष्मण के मध्य बहुत तीखी नोक–झोंक हो गई। परशुराम तो स्वभाव से क्रोधी थे ही। लक्ष्मण ने बालक होने पर भी अपने व्यंग्य–वचनों से उनके

क्रोध को भड़का दिया। लक्ष्मण द्वारा बहुत तीखे कटाक्ष करने पर सभा में एकत्रित लोग 'हाय–हाय' कहने लगे।

3. वर्तमान संदर्भों में 'कन्यादान' कविता कितनी उपयुक्त है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को जो सीख दी है, वह उसके भले के लिए दी हैं। उसने दुनिया का व्यवहार देखा है। अपने साथ बीते अनुभव भी जिए हैं। वह नारी के शोषण की सारी कहानी जानती है। नई बहू की सरलता का लाभ उठाकर उस पर अनुचित दबाव बनाया जाता है। माँ नहीं चाहती है कि उसकी बेटी की सरलता का गलत फायदा उठाया जाए। इसलिए यह सीख युग के अनुकूल है।

4. सामाजिक क्रांति में साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। 'उत्साह' कविता के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर : 'उत्साह' कविता में कवि ने बादल से गरजने का अनुरोध किया है तथा सामाजिक चेतना की नूतन कविता लिखने वाले कवियों से कहा है कि वे अपने हृदय में विद्युत–सी छवि धारण कर लें। कविता में ऐसे कवियों को आह्वान करते हुए कहा गया है कि वे अपनी नूतन कविता में विद्युत–सी तेजी का संचार करें। इस प्रकार कवियों को यह संदेश दिया गया है कि वे अपनी कविताओं में विध्वंस, विप्लव और क्रांति चेतना का स्वर भर दें। स्पष्ट है कि कविता में इस तथ्य को रेखांकित किया गया है कि साहित्य सामाजिक क्रांति या बदलाव की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

5. यह 'दंतुरित मुस्कान' कविता में 'बाँस और बबूल' किसके प्रतीक बताए गए हैं? इन पर शिशु की मुस्कान का क्या असर होता है?

उत्तर : 'यह दंतुरित मुस्कान' कविता में 'बाँस और बबूल' कठोर और निष्ठुर हृदय वाले लोगों का प्रतीक हैं। ऐसे लोगों पर मानवीय संवेदनाओं का कोई असर नहीं होता है। शिशु की दंतुरित मुस्कान देखकर ऐसे लोग भी सहृदय बन जाते हैं।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए– $3 \times 2 = 6$

1. परिश्रम के बल पर व्यक्ति कठिन से कठिन लक्ष्य को भी सरलता से प्राप्त कर लेता है। इस कथन के पक्ष में अपने विचार लिखें।

उत्तर : परिश्रम सफलता का मूलमंत्र है। जिसने भी इस मंत्र को जीवन में अपनाया है उसके अमृत स्पर्श मात्र से ही कठिन से कठिन कार्य क्षणों में पूर्ण हो गया। सफलता प्राप्त करने के लिए अथक परिश्रम आवश्यक है। बिना परिश्रम के कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता। सृष्टि की रचना से लेकर आज की विकसित सभ्यता सभी मानव के अथक परिश्रम का परिणाम है। जीवन रूपी दौड़ में परिश्रमी ही विजयी होता है। अतः जीवन में परिश्रम और अभ्यास का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

2. सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है, वह उनकी किस मानसिकता को दर्शाती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : अंग्रेजी हुकूमत के समाप्त होने पर भी भारत के सरकारी तंत्र में अंग्रेजी शासकों और संस्कृति का प्रभाव सर्वत्र छाया हुआ है। आज विदेशी दिल–दिमाग, तौर–तरीके और रहन–सहन हिंदुस्तानियों के सिर चढ़कर बोल रहे हैं। हम विदेशी बातों को बड़ी शान से अपना रहे हैं और भारतीय संस्कृति को ठुकरा रहे हैं। वस्तुतः यह मानसिकता हमारे भीतर पनपती हीन ग्रंथि को उजागर करती है। बार–बार मीटिंग का आयोजन करना, मूर्तिकार को बुलाना, समाचार–पत्रों में उल्लेख करना तथा महारानी के आगमन की तैयारी में आँखें बिछा देना स्पष्ट रूप से मानसिक परतंत्रता अथवा गुलामी को उजागर करता है।

3. 'हमने मइयाँ के अँचल के प्रेम और शांति के चँदोवे की छाया न छोड़ी।' प्रस्तुत पाठ्यांश से आप किन मूल्यों का निष्कर्ष निकाल सकते हैं?

उत्तर : परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है और माता प्रथम शिक्षक। जन्म लेते ही बालक सर्वप्रथम अपने घर और सबसे अधिक अपनी माता के संसर्ग में रहता है। माता ही उसका संपूर्ण ख्याल रखती है। बच्चे माता से ही सामाजिक आचार व्यवहारों को ग्रहण करते हैं। भाषा का प्रथम पाठ भी बालक अपनी माँ से ही प्राप्त करते हैं। माता बालक को सभी सामाजिक संबंधों एवं उनसे सामंजस्य बनाए रखने का गुर भी सिखाती है। अतः मानव जीवन में माता का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। प्रस्तुत पाठ्यांश हमें माता और बालक के संबंध से अवगत कराता है तथा माँ के प्रति बालक की संवेदनशीलता को दर्शाता है। माँ से सभी का स्नेहपूर्ण रिश्ता होता है जो आमरण बना रहता है।

खण्ड–घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए– 10

(1) वर्तमान शिक्षा पद्धति

संकेत बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ माध्यमिक शिक्षा की आवश्यकता ✲ शिक्षा की उपयोगिता ✲ उपसंहार

(2) आधुनिक युग में कंप्यूटर का महत्त्व

संकेत बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ कंप्यूटर का महत्त्व एवं उपयोगिता ✲ सूचना प्रौद्योगिकी में योगदान ✲ उपसंहार

(3) मेट्रो : एक सुविधाजनक परिवहन

संकेत बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ मेट्रो का आरंभ ✲ मेट्रो की आवश्यकता एवं लाभ ✲ उपसंहार

उत्तर :

(1) वर्तमान शिक्षा पद्धति

संकेत बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ माध्यमिक शिक्षा की आवश्यकता ✲ शिक्षा की उपयोगिता ✲ उपसंहार

भूमिका– शिक्षा मानव जीवन की आधारशिला है। शिक्षा व्यक्ति के स्वयं के विकास एवं देश के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर तथा अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाती है। हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति गुरुकुल पद्धति पर आधारित थी, जिसमें बच्चों को विद्यार्जन हेतु गुरु के पास भेज दिया जाता था और वे अपनी संपूर्ण शिक्षा अर्जित करने के उपरांत अपने घर वापस आते थे। वर्तमान शिक्षा पद्धति पाश्चात्य शिक्षण पद्धति पर आधारित है, जिसका लक्ष्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है।

माध्यमिक शिक्षा की आवश्यकता– वर्तमान शिक्षा पद्धति तीन श्रेणियों में विभक्त है– प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च या विश्वविद्यालयी शिक्षा। इन तीनों श्रेणियों में माध्यमिक शिक्षा अति महत्वपूर्ण है अथवा कह सकते हैं कि माध्यमिक शिक्षा ही राष्ट्र की रीढ़ है। माध्यमिक शिक्षा के उपरांत ही विश्वविद्यालयी शिक्षा ग्रहण की जा सकती है, इसलिए माध्यमिक शिक्षा की उपयोगिता को देखते हुए ही अनेक योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को उच्च व अच्छी आधुनिक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए 'नवोदय विद्यालय' जैसी शैक्षिक संस्थाओं तथा केंद्रीय विद्यालय जैसी संस्थाओं को स्थापित करने का प्रशंसनीय कार्य किया है। प्रत्येक बच्चे तक शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित करने के उद्देश्य से ही सरकार ने शिक्षा का अधिकार कानून पारित किया। इससे संबंधित अनुच्छेद 21 में 6–14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान सुरक्षित है।

शिक्षा की उपयोगिता– जो शिक्षा हमारे जीवन का निर्माण कर सके, विचारों का सामंजस्य स्थापित कर सके वही वास्तव में शिक्षा है। शिक्षा सबसे शक्तिशाली अस्त्र है, जिससे दुनिया को बदला जा सकता है। हमारी शिक्षा प्रणाली में कुछ कमियाँ हैं; जैसे– छात्रों में अनुशासनहीनता की भावना का होना, वर्तमान शिक्षा का व्यावसायिक योग्यता न दे पाना आदि। शिक्षा को रटंत न बनाकर उसके व्यावहारिक पक्ष पर बल देना होगा। नवयुवकों के शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक विकास के फलस्वरूप ही देश का विकास हो पाएगा।

उपसंहार– शिक्षा संबंधी इन कमियों को दूर करके हम बेरोजगारी की समस्या पर भी नियंत्रण प्राप्त कर सकते हैं। चाणक्य के अनुसार, ''शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है। शिक्षित व्यक्ति सदैव सम्मान पाता है। शिक्षा की शक्ति के आगे युवा शक्ति और सौंदर्य शक्ति दोनों की कमजोर हैं।''

(2) आधुनिक युग में कंप्यूटर का महत्त्व

संकेत बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ कंप्यूटर का महत्त्व एवं उपयोगिता ✲ सूचना प्रौद्योगिकी में योगदान ✲ उपसंहार

भूमिका– विज्ञान ने मनुष्य को सुख–सुविधा के अनेक साधन प्रदान किए हैं, जिनमें कम्प्यूटर सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। विज्ञान द्वारा विकसित यह यंत्र मनुष्य के मस्तिष्क की भाँति कार्य करता है। इसने हमारे जीवन को अनेक सुख–सुविधाओं से भर दिया है। कंप्यूटर के कारण ही सूचनाओं की प्राप्ति और इनके संवहन में क्रांतिकारी वृद्धि हुई है।

कंप्यूटर का महत्त्व एवं उपयोगिता– आज कंप्यूटर का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं जहाँ इसे प्रयोग में न लाया जाता हो। प्रारंभ में इसके प्रयोग को लेकर विरोध अवश्य हुआ था, लेकिन वर्तमान समय में वेतन, बिजली–बिल, अस्पताल, अनुसंधान, विद्यालय, ई–टिकट, मौसम की जानकारी, व्यापार तथा जानकारी जुटाने, डाटा तैयार करने आदि क्षेत्रों में कंप्यूटर का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके उपयोग से न केवल कार्य करने के तरीकों में बदलाव आया है, बल्कि इसने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका भी निभाई है। कंप्यूटर ने चिकित्सा के क्षेत्र में भी बहुत योगदान दिया है। कंप्यूटर बीमारी का कारण जानने तथा उनका उपचार करने में सक्षम है। इससे जटिल–से–जटिल समस्याओं को कुछ ही क्षणों में हल किया जा सकता है। मीडिया और सूचना के क्षेत्र में कंप्यूटर की उपयोगिता व्यापक हुई है, वहीं कंप्यूटर से व्यक्ति ने नई–नई जानकारियाँ प्राप्त करके अपना ज्ञान बढ़ाया है। इसके महत्त्व को देखते हुए विद्यालय में विद्यार्थियों को कंप्यूटर शिक्षा प्रदान की जा रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी में योगदान– कंप्यूटर ने सूचना प्रौद्योगिकी में योगदान देकर क्रांति ला दी। ई–मेल जैसी सुविधाओं ने आँकड़ों एवं सूचनाओं के परस्पर आदान–प्रदान को सुलभ बनाया है। वहीं उपग्रहों से संपर्क बनाना, एनीमेशन से चलचित्रों का निर्माण करना आदि कार्यों को भी सुलभ किया है। कंप्यूटर से एक स्थान से दूसरे स्थान पर संदेश भेजने एवं बात करने में एवं सूचना प्राप्त करने में सहायता प्राप्त हुई है। कंप्यूटर रेडियो, टेलीविजन के कार्यक्रमों के प्रसारण तथा अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भी अपना अभूतपूर्व योगदान दे रहा है।

उपसंहार– कंप्यूटर की उपलब्धियाँ अनगिनत है। यह अभी भी बहुत संभावनाओं से भरा क्षेत्र है, लेकिन फिर भी इसका उपयोग वैज्ञानिक और व्यापारिक प्रक्रियाओं में कितना ही क्यों न बढ़ जाए, परंतु यह मानव मस्तिष्क का स्थान नहीं ले सकता। मनुष्य ने कंप्यूटर बनाया है, कंप्यूटर ने मनुष्य को नहीं। इसके अतिरिक्त कंप्यूटर के नकारात्मक परिणाम भी हो सकते हैं। अतः विज्ञान के इस चमत्कार का उचित ढंग से प्रयोग किया जाना चाहिए, जिससे मानव–जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़े।

(3) मेट्रो : एक सुविधाजनक परिवहन

संकेत बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ मेट्रो का आरंभ ✲ मेट्रो की आवश्यकता एवं लाभ ✲ उपसंहार

भूमिका– पहले मनुष्य पैदल चलकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता था। तत्पश्चात् पहिए का आविष्कार हुआ और मनुष्य ने घोड़ागाड़ी, बस, रेल आदि को बनाया। इनके आने से आवागमन में सुविधा होने लगी, परंतु मनुष्य की आवश्यकताएँ प्रतिदिन बढ़ती ही गईं, इसलिए परिवहन के नए साधनों की आवश्यकता पड़ी। परिणामस्वरूप स्थल परिवहन की नवीनतम कड़ी मेट्रो रेल हम सबके सामने है। मेट्रो रेल को प्रायः शहरों से जोड़कर देखा जाता है, जो विद्युत के द्वारा अत्यंत तीव्र गति से चलती है तथा बड़ी संख्या में यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचा सकती है।

मेट्रो का आरंभ– विश्व की पहली मेट्रो रेल का पदार्पण लंदन में 1863 ई. में हुआ था, उसके बाद शेष विश्व ने परिवहन की इस तकनीक का लाभ उठाया। भारत में मेट्रो रेल की शुरुआत वर्ष 1984 में, कलकत्ता (कोलकाता) में हुई। इसके बाद मेट्रो के कदम 24 दिसंबर, 2002 को दिल्ली में पड़े। दिल्ली की पहली मेट्रो रेल लाइन का उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने किया था, जो रिठाला तथा शाहदरा को आपस में जोड़ती थी। आज दिल्ली में मेट्रो नेटवर्क का बहुत विस्तार हो चुका है।

मेट्रो की आवश्यकता एवं लाभ– जनसंख्या वृद्धि के कारण हमें परिवहन के नए साधनों की आवश्यकता अनुभव हुई। मेट्रो रेल के आने से यातायात सुगम हो गया। यह आधुनिक सुविधाओं से युक्त तथा स्वचालित है। इसमें यात्रियों की सुविधा के लिए भूमिगत स्टेशनों पर एयरकंडीशन, यात्रियों को रेल संबंधित सूचना देने के लिए सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली तथा सीसीटीवी की व्यवस्था, टिकट व्यवस्था के लिए नवीनतम प्रणाली पर आधारित स्मार्ट कार्ड की व्यवस्था की गई है। यह लंबी दूरियों को तय करने में कम-से-कम समय लेती है तथा यात्रियों को बसों की भाँति घंटों मेट्रो की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। यह सुविधाजनक तो है ही, साथ ही सुरक्षित भी है। मेट्रो-स्टाफ तथा पुलिसकर्मी सदैव यात्रियों की सहायता व सुरक्षा के लिए तत्पर रहते हैं।

उपसंहार– मेट्रो ने हमारे जीवन को अत्यंत सुगम बना दिया है। इसके कारण हम दिल्ली जैसी भीड़-भाड़ वाली जगह पर भी आराम से यात्रा कर सकते हैं। मेट्रो सेवा का प्रयोग करते समय एक नागरिक होने के नाते हमारे भी कुछ कर्तव्य हैं; जैसे-मेट्रो की साफ-सफाई में अपना योगदान दें, मेट्रो रेल के दिशा-निर्देशों का पालन करें, मेट्रो को क्षति न पहुँचाएँ इत्यादि। मेट्रो एक सार्वजनिक साधन है, जिसका उपयोग हम सबको सावधानीपूर्वक तथा जिम्मेदारी से करना चाहिए।

12. दूरदर्शन के महानिदेशक को लगभग 80-100 शब्दों में एक पत्र लिखकर राष्ट्रीय एकता तथा सांप्रदायिक सद्भाव बढ़ाने वाले कार्यक्रम प्रसारित करने का आग्रह कीजिए। 5

उत्तर :

सेवा में,
महानिदेशक
दूरदर्शन केन्द्र
नई दिल्ली
दिनांक- 28 जुलाई, 2019

विषय– राष्ट्रीय एकता तथा सांप्रदायिक सद्भाव बढ़ाने वाले कार्यक्रम प्रसारित करने हेतु।

महोदय,

मैं दूरदर्शन के कार्यक्रमों का नियमित दर्शक हूँ और मैंने देखा है कि दूरदर्शन पर कई मनोरंजक कार्यक्रम प्रसारित होते हैं जिस को युवा, वयस्क और बच्चे बड़ी दिलचस्पी से देखते हैं। लेकिन मैं चाहता हूँ कि दूरदर्शन पर राष्ट्रीय एकता व सांप्रदायिक सद्भाव बढ़ाने वाले कार्यक्रमों को भी प्रसारित किया जाए। सभी वर्गों की रुचि के अनुसार आप उनके लिए ऐसे कार्यक्रम दूरदर्शन में सम्मिलित करें जिससे राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित हो।

मेरा आपसे निवेदन है कि राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भाव बढ़ाने वाले कार्यक्रमों को दूरदर्शन पर अवश्य प्रसारित करें।

धन्यवाद सहित।

भवदीय
नरेश जैन
नई दिल्ली

अथवा

'सामाजिक सेवा कार्यक्रम' के अंतर्गत किसी गाँव में सफाई अभियान के अनुभवों का उल्लेख करते हुए अपने मित्र को एक पत्र लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

ए-125 गली नं. 5,
मुरलीपुरा, जयपुर
दिनांक- 15 मई, 2019

प्रिय मित्र राहुल
सप्रेम नमस्ते!

मैं यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ और ईश्वर से तुम्हारी कुशलता की कामना करता हूँ। मैं इस बार ग्रीष्मावकाश में अपने गाँव गया था। वहाँ मैंने 'सामाजिक सेवा कार्यक्रम' में शामिल होकर गाँव के स्वच्छता अभियान में हिस्सा लिया। हमने जगह-जगह जाकर गाँव में सफाई की। जगह-जगह कूड़ेदान रखे। घर-घर जाकर लोगों को स्वच्छता का महत्त्व समझाया और कूड़ा

कूड़ेदान में डालने के लिए कहा। हमने लगभग सौ नए पेड़ भी लगाए। इस कार्य में हमारे गाँव के पंचायत प्रमुख ने भी सराहनीय योगदान दिया।

ये कार्य करके मुझे बहुत खुशी मिल रही है। सफाई अभियान के कारण गाँव में चारों ओर स्वच्छता और हरियाली फैली हुई है। अब तो विद्यालय खुलने का समय भी निकट आ रहा है। मुझे इस संबंध में तुमसे बहुत ढेर सारी बातें करनी है। वापस लौटते ही मुझसे मिलना। अपने माता-पिता को प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र
हिमेश चौधरी

13. अभिनव क्रिएशन की ओर से ज्वैलरी की प्रदर्शनी हेतु 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। 5

उत्तर :

अभिनव क्रिएशन
ज्वैलरी एवं गिफ्ट

10% की विशेष छूट 10% की विशेष छूट

आप सभी का ज्वैलरी की भव्य प्रदर्शनी एवं सेल में स्वागत है। प्रदर्शनी में डायमंड ज्वैलरी, गोल्ड ज्वैलरी आदि का नवीन संग्रह है।

प्रदर्शनी स्थान
विनायक बाजार,
सेक्टर-6, दिल्ली
रविवार, 24 नवंबर, 2019
प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक
फोन नं. 24864200

अथवा

आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित घर किराए पर देने के लिए एक विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में तैयार कीजिए।

उत्तर :

किराये के लिए मकान उपलब्ध

- 200 गज
- 1 मंजिला
- 2 बेडरूम
- 2 बाथरूम
- बड़ा बरामदा
- बड़ा लॉन गार्डन
- रेल्वे स्टेशन से 1 कि.मी. की दूरी पर
- मेट्रो से 2 कि.मी.
- उचित किराया

संपर्क करें- 9351230000

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

WWW.CBSE.ONLINE

This sample paper has been released by website www.cbse.online for the benefits of the students. This paper has been prepared by subject expert with the consultation of many other expert and paper is fully based on the exam pattern for 2019-2020. Please note that website www.cbse.online is not affiliated to Central board of Secondary Education, Delhi in any manner. The aim of website is to provide free study material to the students.